E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2020; 2(2): 92-93
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 22-05-2020
Accepted: 24-06-2020

सुजाता कुमारी
पूर्व शोधाथी, विश्वविद्यालय
राजनीति विज्ञान विभाग, ललित
नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सुजाता कुमारी
पूर्व शोधाथी, विश्वविद्यालय
राजनीति विज्ञान विभाग, ललित
नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

भारत में राष्ट्रवाद के उद्‌भव एवं विकास के कारण

सुजाता कुमारी

सारांश
राष्ट्रवाद वह भावना है जो लोगों को एकता के सूत्र में बांधती हैं और स्वराज के प्रति विश्वास पैदा करके राष्ट्रीय आन्दोलन को एक ठोस आधार प्रदान करती है। राष्ट्रीय आन्दोलन ही वह विचार है जो लोगों को चेतना प्रदान करने में समाज सुधारकों, राष्ट्रवादी नेताओं, राजनितिक संस्थाओं, शिक्षा प्रणाली, राष्ट्रवादी आदि तत्वों का बहुत अधिक योगदान रहा है।

कुटशब्दः राष्ट्रवाद, उद्‌भव, विकास

प्रस्तावना
भारतीय राष्ट्रवाद अर्वाचीन तथ्य है। ब्रिटिश शासन और विश्व–शक्तियों के कारण तथा भारतीय समाज में उत्पन्न और विकसित अनेक भावनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ कारकों की क्रिया प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ब्रिटिशकाल में भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।
राष्ट्रवाद के सामान्य अध्ययन की दृष्टि से भारतीय राष्ट्रवाद के आविर्भाव और उत्थान का अपना विशिष्ट स्थान है। भारत में राष्ट्रीयता के विकास की प्रक्रिया बड़ी जटिल और बहुमुखी है। उसके अनेक कारण हैं। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत की सामाजिक संरचना कई अर्थों में अद्वितीय थी। यहाँ की अर्थव्यवस्था का आधार यूरोपीय देशों के मध्ययुगीन प्राक्पूँजीवादी समाजों से भिन्न था।
भारत विभिन्न भाषाओं विभिन्न धर्मों और बड़ी आबादी वाला बहुत बड़ा देश है। आबादी का लगभग दो तिहाई भाग हिंदु है और हिंदु–समाज विभिन्न जातियों उपजातियों में विभक्त है। फिर हिंदुत्व कोई समशील धर्म भी नहीं, वरन् बहुत सारी उपासना–पद्धतियों की संगुटिका है जिसने इसे अलग–अलग संप्रदायों में बाँट रखा है।
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, राजनीतिक संगठनों, विचारकों, क्रांतिकारों को मिलाकर किए गए कुछ ऐसे आंदोलन थे जिनका एक ही लक्ष्य था भारत से ईस्ट इंडिया कंपनी को जड़ से उखाड़ फेंकना स्वतंत्रता प्रप्ति में इन क्षेत्रीय अभियानों आंदोलनों प्रयत्नों और कुछ क्रांतिकारी आंदोलनों का खासा महत्व है। यहाँ हम आपको बता रहे है कुछ ऐसे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और घटनाओं के बारे में जिनकी वजह से भारत को स्वतंत्रता मिली।
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन राष्ट्रवाद का उदय (त्पेम व िदंजपवदंसपेउ) भारत में संगठित राष्ट्रीय आंदोलन उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रारम्भ हआ था। मुख्य रूप से ब्रिटिश सामाजयवाद की नीतियों की चुनौतियों के प्रत्युत्तर में भारतीयों ने एक राष्ट्र के रूप में सोचना प्रारम्भ किया था। भारतीयों में राष्ट्रीय भावना के विकास तथा भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के लिए स्वयं ब्रिटिश शासन ने आधार तैयार किया।

राष्ट्रवाद के उदय के कारण
सामाजिक अस्तित्व के पूर्ववर्ती काल के अराष्ट्रिय जन–समुदाय से आधुनिक युग के राष्ट्र अपने निम्नलिखित गुणों के कारण भिन्न हैं, राष्ट्र के सारे सदस्य किसी निश्चित भूभाग में एक ही अर्थतन्त्र के अन्तर्गत परस्पर जैविकरूप से सम्पृक्त होते हैं, जिसके फलस्वरूप उनमें सम्मिलित आर्थिक अस्तित्व का भाव होता है, वे प्रायः एक ही भाषा का प्रयोग करते हैं, उनकी एक–सी मनोवैज्ञानिक संरचना और उससे विकसित सार्वजनिक लोक–संस्कृति होती है। ऐसा आदर्श राष्ट्र जो पूर्णतः विकसित हो और जिसमें ये सब गुण विद्यमान हों भावात्मक कल्पना मात्र है, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र के अर्थतन्त्र सामाजिक संगठन, चिंतन प्रकृति और सम्मृति में अतीत के तत्त्व विभिन्न अंशो में उत्तरजीवी रहे हैं। फिर भी सोलहवीं सदी से ही मानव इतिहास के विशाल रंगमंच पर राष्ट्रगत सम्मेलन को विभिन्न अवस्थाओं में राष्ट्रीय जन–समुदायों का आविर्भाव होता रहा है।
राष्ट्रवाद के उदय के लिए विभिन्न कारण सम्मिलित रूप से ब्रिटिश शासन तथा उसके प्रत्यक्ष तथा परोक्ष परिणामों ने भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास के लिए भौतिक, नैतिक तथा बौद्धिक

परिस्थितियां तैयार की धीरे–धीरे भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक समूह ने देखा कि उसके हित कभी भी अंग्रजी शासन के हाथ में सुरक्षित नहीं रह सकते।

अंग्रेजी सरकार की छत्र–छाया में किसानों से मालगुजारी के नाम पर उपज का बहुत बड़ा भाग ले लिया जाता था। जमींदारों, व्यापारियों तथा सूदखोरों को किसानों से लगान वसूलने तथा तरह–तरह से उसका शोषण करने के लिए सरकारी पदाधिकारियों व कर्मचारियों का पूरा सहयोग प्राप्त था। सरकारी नीति जिसमें विदेशी प्रतियोगिता को प्रोत्साहन दिया जा रहा था के कारण दस्तकार तथा शिल्पी भी बेरोजगार होने लगे थे, कारखानों तथा बागानों में मजदूरों का तरह–तरह से शोषण हो रहा था।

इस प्रकार विदेशी सामाज्य की भेदभाव पूर्ण नीतियों के परिणामस्वरूप भारतीयों में वाद की भावनाओं ने जन्म लेना प्रारम्भ किया, इस प्रकार एक शक्तिशाली सामाज्यवाद विरोधी राष्ट्रीय आंदोलन का धीरे–धीरे विकास हुआ इसने लोगों में एकता स्थापित करने और सामाज्यवाद का मिलकर विरोध करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

सरकार एक और विदेशी पूंजीपतियों को प्रोत्साहित कर रही थी दूसरी ओर देश के लोगों को पूरी तरह से अनदेखा किया जा रहा था, सरकार की व्यापारिक कर चुंगी तथा यातायात संबंधी नीतियों के कारण भारतीय पूंजीपति वर्ग को बहुत नुकसान उठाना पड़ रहा था समाज के सभी वर्गों के हो रहे शोषण के कारण लोगों ने महसूस किया कि ब्रिटिश सरकार के अधिन अब और लम्बे समय तक नहीं रहा जा सकता उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में राष्ट बन चुके थे, जिसका भारतीयों पर राष्ट्रवादी विचारों के सन्दर्भ में बहुत ही अनुकूल प्रभाव पड़ा।

पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृतिक ने राष्ट्रवादी भावना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। पढ़े–लिखे भारतीयों को बर्क, मिल, ग्लैडस्टोन, वाइट, मैकाले जैसे लोगों के विचार सुनने का अवसर मिला तथा मिल्टन, शैले व वायरन आदि महान् कवियों की कविताएं पढ़ने एवं रूसो, मैजिनी तथा वाल्टेयर आदि लोगों के विचारों को जानने का सौभाग्य मिला , जिससे भारतीयों में राष्ट्रवादी भावनाओं ने जन्म लिया अनेक धार्मिक तथा समाज सुधारकों, जैसे– राजाराम मोहन राय देवेन्द्र नाथ ठाकुर किशोर चन्द्र सेन, पी. सी. सरकार, ईश्वरचन्द्र विदयासागर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानंद आदि ने भारत के अतीत का गौरवपूर्ण चित्र उपस्थित का भारतीयों में राष्ट्रवाद के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्चाह किया, अनेक समाचार–पत्रो तथा साहित्य ने लोगों में राष्ट्रीय जागरण की भावना को जगाया, राजाराम मोहन राय ने सर्वप्रथम राष्ट्रीय प्रेस की नींव डाली तथा 'संवाद कौमुदी' बंगला में तथा 'मिरात उल अखबार' फारसी में, का सम्पादन कर भारत में राजनैतिक जागरण की दिशा में प्रयास किया। इनके अतिरिक्त इण्डियन मिरर, बम्बई समाचार, दि हिन्दू, पैट्रियाट, अमृत बाजार पत्रिका, दि केसरी आदि समाचार पत्रों का प्रभाव भी बहुत महत्वपूर्ण था।

राष्ट्रीय साहित्य का भी राष्ट्रीय भावना की उत्पत्ति की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान रहा। भारतेन्दु हरिशचन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण चन्द्र बद्री नारायण चौधरी, दीनबन्धु मित्र, हेम चन्द्र बैनर्जी, नवीनचन्द्र सेन, बंकिम चन्द्र चटोपाध्याय तथा रविन्द्र नाथ ठाकुर की रचनाओं ने लोगों को काफी हद तक प्रभावित किया और लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तीव्र परिवहन तथा संचार साधनों में रेल, डाक–तार आदि के विकास ने भी राष्ट्रवाद की जड़ को मजबूत किया। इनके अतिरिक्त लार्ड लिटन के कार्यकाल में 1876 से 1884 तक बिना सोचे–समझे ब्रिटिश सरकार द्वारा कुछ ऐसे कार्य किए गए जिनसे राष्ट्रीय आन्दोलन को तीव्र गति प्राप्त हुई। 1877 में जब दक्षिण भारत के लोग अकाल से पीड़ित ये तो लिटिन ने ऐतिहासिक दिल्ली दरबार लगाया था।

1877 में भारतीयों को सार्वजनिक सम्पत्ति का गला घोटने के लिए प्रसिद्ध भारतीय प्रेस अधिनियम स्वीकार किया गया। भारतीयों और यूरोपियनों के बीच भेद–भाव पर आधारित शस्त्र अधिनियम भी इसी समय स्वीकार किया गया। अन्त में इल्बर्ट बिल ने भारतीयों के दिलों को पुनः जबरदस्त ठेस पहुचाई तथा भारतीयों के अन्दर राष्ट्रीयता की भावना जगाने में एक बार फिर महत्वपुर्ण योगदान दिया।

निष्कर्ष

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनों के इतिहास का अवलोकन करने से पता चलता है कि इसको गति प्रदान करने में हमारे राष्ट्रवादी नेताओं महात्मा गांधी, नेहरू, अरविन्द्र गोश, सुभाष, भगत सिंह, लाला राजपत राय, दादा भाई नरोजी आदि के विचारों का अहम योगदान रहा है। इनके विचारों ने भारतीय जन मानस को इस बात से अवगत कराया है कि हमारे शोषण व उत्पीड़न के लिए अंग्रेजी शासन व उसकी भेदभाव पूर्ण नीतियां पूर्णरूप से उत्तरदायी है। इसके अतिरिक्त तत्कालीन समय में राष्ट्रीय घटनाओं ने भारत में उग्रपंथी राष्ट्रवाद के विकास की जमीन तैयार कर दी और यह स्पष्ट हो गया कि अंग्रेज अजय नहीं है। यदि हम शोषण करने वाली सरकार से मुक्ति चाहते हैं तो हमें पूर्ण स्वराज्य की तरफ कदम बढ़ाने जरूरी है। ताकि भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन अन्तिम लक्ष्य तक पहुंच सके।

संदर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. कुमार एम, एवं शर्मा, दिप्ती जवाहर लाल नेहरू, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली।
2. तातेड़, सोहन राज एवं सिंह, विद्यासागर, भारत में अंग्रेजी राज एवं नवजागरण, लिटरेरी सर्किल, जयपुर।
3. कौशिक आशा, गांधी चिन्तन तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य, प्रिन्टवैल. जयपुर।
4. के.सी. यादव हरियाणा का इतिहास अदिकाल से 1966 ई. होप इंडिया पब्लिकेशन।
5. चौबे, शिवानी किंकर, भारत में उपनिवेशवाद, स्वतन्त्रता संग्राम और राष्ट्रवाद और ग्रन्थ शिल्पी नई दिल्ली।